भूमिका

रचनाएं अपने समय, समाज और दर्शन की उपज होती है। कोई भी सार्थक रचना अपने परिवेश के अनुरूप दूसरे समाज की निजता से भी जुड़ जाती है। 21वीं सदी के नए साहित्यिक विमर्शों में **'स्त्री-विमर्श'** जिसका अर्थ है स्त्री के विषय में गम्भीर चिंतन, प्रमुखता से उभर कर आया है, जबकि कविता विधा में सहज संप्रेषणीय रूप बहुत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत हुआ है। **स्त्री-विमर्श** यथार्थ में आधुनिकता और समकालीनता से जुड़ा हुआ प्रश्न है। हिंदी कविता के मानचित्र में **अनामिका** का अपना मुकाम है, उन्होंने अपने संग्रह **'खुरदुरी हथेलियाँ'**, **'कविता में औरत'**, **'दूब धान'** को स्त्रीत्व से जोड़ते हुए उसमें अंतर्वस्तु, भाषा और शिल्प का एक नया धरातल निर्मित किया है।

हिन्दी कविता में जिन रचनाकारों ने स्त्री-रचनाशीलता को एक कोटि के तौर पर स्थापित किया, **अनामिका** उनमें अग्रणी हैं। अनामिका का स्त्री विमर्श केवल चर्चा में रहने के लिए किया जा रहा विमर्श नहीं है। वह उस आधी आबादी का विमर्श है जो सदियों से हाशिए पे रहती आयीं हैं। कथाकारों की तरह अपने कविता के पात्रों के मानस में उतर कर उसके अंतरद्वंद्वों, उसके दर्शन के साथ, उसकी भाषा में ही उसे उतार देना अनामिका की रचना प्रक्रिया का हिस्सा रहा है। **अनामिका** ने स्त्री जीवन के भीतर के भयावह सच को बहुत सहज ढंग से काव्यानुभूति में परिवर्तित कर एक नए रूप में, नए अर्थ में, आग्रह भरे तेवर के साथ प्रस्तुत किया है। **अनामिका** की स्त्रियाँ परंपरा का द्वन्द्व सँभाले अपनी रौ में आगे बढ़ती स्त्रियाँ हैं जो स्वभाव से ही विद्रोहिणी हैं, विद्रोह उनकी नियति नहीं है, जीवन ही है वह। विद्रोह के दीपक को जलाती हुई, वह किसी भी कठिन राह पर चलने की चुनौती स्वीकारती है।

'खुरदुरी हथेलियाँ', **'कविता में औरत'**, **'दूब धान'** के रचनात्मक एवं भावनात्मक मूल्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन तीनों के बीच एक समानता का तार जुड़ा हुआ है। अनामिका ने इन कविताओं में

आधी आबादी के गहन दुःख को उसकी भयावहता एवं व्यापकता के साथ अभिव्यक्त किया है। भारतीय समाज एवं जनजीवन में जो घटित हो रहा है और घटित होने की प्रक्रिया में जो कुछ गुम हो रहा है, अनामिका की इन कविताओं में उसकी प्रभावी पहचान और अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

देश के महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालयों के शोधप्रबंधों के अवलोकन के बाद मैंने पाया कि अभी त-क **अनामिका** के इन तीन **(‘खुरदुरी हथेलियाँ’**, **‘कविता में औरत’**, **‘दूब धान’)** काव्य संग्रहों को लेकर शोध कार्य नहीं हुआ है। इसलिए मेरी रोचकता और बढ़ गयी और मैंने अपने एम. फिल. शोध के लिए इन रचनाओं को चुना। अनामिका ने अपनी कविताओं में एक ओर, उन कोनों-अँतरों को काव्य-स्वर प्रदान किया, जो अब तक कविता की परिधि से बाहर थे। दूसरा, ऐसी कविताओं में अन्तर्निहित, विशिष्टता की व्याख्या भी की और इन्हें सैद्धान्तिक जामा भी पहनाया। शोध कार्य मूलतः अनामिका की कविताओं में सदियों के दासत्व से मुक्ति की झटपटाहट, मैं भी हूँ का भाव और सामाजिक रूढ़ियों से टकराती हुई स्त्री को दर्शाती है।

अनामिका की कवितायें अपने यथार्थपरता तथा रचनात्मकता के आधार पर लोकप्रिय हुई हैं। लघु शोध-प्रबंध**“ अनामिका की कविताओं में स्त्री ”**अनामिका की महत्त्वपूर्ण कृतियों में स्त्री जीवन को केंद्र में संजोए हुए हैं। कुछ ज़रूरी तथ्यों के सहारे इस प्रबंध का अध्यायीकरण **तीन अध्यायों** एवं **नौ उप-अध्यायों** में किया गया है।

प्रथम अध्याय‘ :अनामिका और उनका काव्य संसार’ में मैंने अनामिका के व्यक्तित्वउनके , द्वारा रचित रचनाओं का उल्लेख किया है तथा उसके विभिन्न पक्षों पर विचार किया है। इसे कुल **तीन उप-अध्यायों** में विभाजित करते हुए जहां **प्रथम उपअध्याय-** में अनामिका के जीवन, व्यक्तित्व और उनकी विचारधारा का समग्र मूल्यांकन किया गया है, वहीं **दूसरे उप अध्याय-**में अनामिका के द्वारा स्त्रीवादी साहित्य में उनके योगदान तथा उनके द्वारा रचित साहित्य की विवेचना की गयी है, और **तीसरे**

उप अध्याय-में अनामिका तथा समकालीन कवयित्रियों को, अपनी कविताओं में छोटे-छोटे संदर्भ, तथा स्त्री-समस्या की ओर दृष्टि डालते हुए, उसे पूरे परिवेश के संदर्भ में मानवीय धरातल पर चित्रित करते हुए दिखाया गया है।

दूसरा अध्याय :**'अनामिका की कविताओं में स्त्री के विविध आयाम'** के अंतर्गत मैंने अनामिका की कविताओं के माध्यम से स्त्री को उसके अंग-प्रत्यंग से हटकर संपूर्णता में देखने की कोशिश की है। इसे कुल **तीन उपअध्यायों-** में विभाजित किया गया है। **प्रथम उपअध्याय-** में यह बताया गया है की, कविता के जरिये स्त्री-विमर्श में हस्तक्षेप करते हुए अनामिका स्त्री और पुरुष को भिन्न कोटि में रखते हुए भी, दोनों को एक-दूसरे का विरोधी बनाकर नहीं रचतीं। स्त्री और पुरुष की आपसी सम्बद्धता और परस्पर तनाव को अनामिका कलात्मक तरीके से सृजित करती हैं। वहीं **दूसरे उप-अध्याय** में, स्त्री की नियति में आये बदलाव की चर्चा की गयी है, जिसमें उसके व्यक्तिगत जीवन का उद्देश्य, दर्शन, मिज़ाज बदल रहा है एवं **तीसरे उपअध्याय-** में भारतीय समाज में पुरुष सत्ता और सामंती संरचना से जूझ रही स्त्रियों के दुःख और संघर्ष का चित्रांकन किया गया है।

तीसरा अध्याय' :**अनामिका की कविताओं की शिल्पगत विशेषताएँ'** के अंतर्गत अनामिका की कविताओं में आए तमाम शब्द, बिम्ब, प्रतीक, वस्तुएँ या जो कुछ भी प्रयुक्त हैं दर्शाया गया है। इसके **तीन उप अध्यायों-**में **प्रथम उप अध्याय-**में दिखाया गया है कि ,वर्तमान में स्त्रियाँ भी अपने मुताबिक भाषा का प्रयोग करने लगी हैं एवं अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व के लिए लेखन के माध्यम को अपना रही है। **दूसरे उपअध्याय-** में यह विवेचित किया गया है कि, अनामिका की बिंबधर्मिता पर पकड़ तो अच्छी है ही, दृश्य बंधों को सजीव करने की उनकी भाषा-शैली, रूपक-विधान भी बेहद सशक्त है। तथा **तीसरे उपअध्याय-** में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि काव्य में दो लोगों

के आपसी संवाद रिश्तों की व्यापकता और गहराई को दर्शाता है। अनामिका के काव्य में निहित संवाद स्त्री समाज के पक्ष में प्रतिरोध का स्वर मुखर करती है।

उपसंहार: इसमें समग्र अध्यायों एवं उप-अध्यायों का मूल्यांकन किया गया है।

किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए एक प्रेरणा ,सहयोग और दिशा निर्देश की आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम मैं अनामिका जी की आभारी हूँ जिनकी कृतियों के माध्यम से यह शोधकार्य पूर्ण - हुआ। तत्पश्चात मैं अपनी शोध-निर्देशक एवं मार्गदर्शक डॉ .सुप्रिया पाठक की आभारी हूँ, जिन्होंने विषय के चयन से लेकर शोध कार्य में आयी समस्याओं तक के निवारण में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। साथ ही स्त्री अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो .शम्भू गुप्त की भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य के लिये लगातार प्रोत्साहित किया। स्त्री अध्ययन विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय समय-पर मुझे अपेक्षित सहयोग प्रदान किया।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में गुरुजनों के अतिरिक्त जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शन और प्रेरित किया, मैं उनके प्रति ह्रदय से आभारी हूँ। विशेष रूप से मेरे माता ,पिता और भाई का पूरा सहयोग रहा, जिन्होंने मुझे अपने से दूर रखकर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उनके सहयोग को शब्दों में अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है परन्तु इतना अवश्य कहूँगी कि स्वयं कठिनाइयों को सहन करते हुए भी मेरे अध्ययन एवं लेखन में उन्होंने मुझे जिस तरह से प्रोत्साहित किया उसके लिये मैं उनके प्रति आजीवन ऋणी रहूँगी।

नवीन सिंह, अरविन्द यादव, अनुरंजन कुमार, विभा मलिक, आशीष कुमार के साथ-साथ अपने सभी दोस्तों के प्रति भी आभारी हूँ, जिन्होंने अपने अमूल्य क्षणों में से कुछ समय निकालकर मेरी

समस्याओं का समाधान किया। इस लघु शोध-प्रबंध में त्रुटियों का यथा संभव निराकरण करने का प्रयास किया गया है, फिर भी कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों तो मैं उसके लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

अनुराधा

(स्त्री अध्ययन विभाग)